बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- balaknamaeditor@gmail.com

अंक-96 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून 2021 | मूल्य - 5 रूपए

एक तो कोरोना दूसरी गर्मी बच्चों का हुआ बुरा हाल

बातूनी रिपोर्टर शेफाली

कोरोना के चलते लॉक डाउन ने इस बार की गर्मी को भुला दिया आम आदमी को नहीं पता चला कि कब गर्मियां शुरू हुई! आम आदमी लॉक डाउन में ज्यादातर अपने घरो से बहार नहीं निकले वह अपने घरो में टिके रहे इसलिए आम आदमी को गर्मी का पता ही नहीं चला लेकिन सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह गर्मी कैसे मुश्किल का सबब बन कर आई! पत्रकारों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चो से जमीनी स्तर पर जाकर इस बात पर बच्चो से जायजा लिया कि कोरोना के चलते इस बार की गर्मी बच्चो के लिए कैसा मुश्किल सबब बनकर आई! जैसा कि आप जानते हैं कि दिन पर दिन गर्मी बढ़ती जा रही है ऐसे में सड़क और फुटपाथ के किनारे रहने वाले बच्चे कड़कती धूप में तपते रहते हैं! बच्चे भूखे प्यासे इधर-उधर भटकते रहते हैं! क्योंकि ना तो बच्चों के लिए करने के लिए कुछ काम हैऔर ना ही पहले जैसी घर की व्यवस्था बची है! बच्चे पहले ही कोरोना वायरस के चलते पस्त हो चुके हैं और उनके माता-पिता के काम बंद हो चुके हैं पर किसी भी तरह से वह कुछ ना कुछ काम करके अपने रोजमर्रा के जीवन में खाने पीने का इंतजाम कर ही लेते हैं लेकिन ऐसे में पानी की एक बड़ी समस्या बच्चों के बीच में से निकलकर आई जब बालकनामा के पत्रकारों ने बच्चों से बात की तो बच्चों ने बताया कि इतनी कड़कती धूप में बच्चे फूल, पेन बेचकर अपना गुजारा कर रहे हैं! लेकिन इस पर भी बड़ी समस्या यह है

कि बच्चे भूखे प्यासे इधर उधर भटकते रहते हैं क्योंकि उनको पीने के लिए पानी भी खरीदकर पीना पड़ रहा है बच्चों से बातचीत करने के दौरान यह बात सामने आई कि बच्चे मजबूरी में सड़को के आसपास काम करते हैं क्यूंकि कोरोना माहमारी के चलते बच्चों के परिवारों की आर्थिक स्थिति पहले ही कमजोर हो चुकी है! इस अवस्था में अब बच्चों को पानी तक नसीब नहीं हो रहा है! इन बच्चों को दूर दूर जाकर पानी भरना पड़ता है! इसके बावजूद पीने का पानी नहीं मिलता है बातचीत के दौरान यह भी मालूम हुआ कि एक दिल्ली जलबोर्ड की सप्लाई है भी तो वहां से बच्चों को पानी नहीं भरने देते है! परिवर्तित नाम भारती ने बताया कि अभी हाल ही की बात है कि जब मेरी सहेली पूनम दिल्ली जलबोर्ड सप्लाई मशीन से पानी लेने के लिए गई तो वहां के जो गार्ड अंकल थे उन्होंने उसे भगा दिया और पीने के लिए पानी नहीं भरने दिया! बच्चे पानी के लिए दूर दूर भटक रहे हैं इतनी गमी में बच्चे अपना जीवनयापन कर रहे हैं और तप्ती धूप में बेहद प्यासे रहते है बच्चे पीने के पानी के लिए एक प्यासे कौए की तरह भटकते रहते है क्यूंकि बच्चों के पास पीने का पानी खरीदने के लिए पैसे नहीं है! इसलिए बच्चे मजबूरन पौधों में लगाने वाला पानी का इस्तेमाल कर रहे हैं तथा बहता हुए पानी का इस्तेमाल कर रहे हैं और उसी पानी को पीते हैं! उसी पानी से अपना खाना बनाते हैँ नहाते है! हम और आप तो कोरोना से बचने के लिए अपने अपने घरों से बाहर नही निकल रहे हैं। और शायद इसी वजह से हमें बाहर के मोसम का सही अंदाजा भी शायद ना हो लेकिन वह सड़क एवं कामकाजी बच्चे जिनका काम भी सड़क पर और स्टेशनों की पटरियों पर जाएं बिना नहीं होता। और उनमें से काफी बच्चों का तो रहना भी सड़क पर ही होता कुल मिलाकर देखा जाए तो उनके दिन के 24 घंटों में से लगभग 16 से 17 घंटे सड़क पर ही बीतते हैं। और इस समय वह बच्चे इतनी भीषण गर्मी में किस प्रकार से अपनी गुजर-बसर कर रहे हैं। एवं उन्हें वर्तमान में गर्मियों की वजह से किस किस प्रकार की समस्याएं हो रही है। आदि के बारे में जानने के लिए हमने निजामुद्दीन स्टेशन पर कबाड़ा चुनने वाले 1 पवन नाम के बच्चे से बातचीत की। तो उसने बताया। कि पहले वे निजामुद्दीन स्टेशन पर कबाड़ा बीनता था। लेकिन लॉकडाउन की वजह से स्टेशनों पर कबाड़ा मिलना बंद हो गया। अब वह एक होटल में काम करता है। जहां पर तंदूर पर खड़े होकर रोटी बनाने में मदद करना।और बर्तन धोना तथा तवे की रोटी गैस पर खड़े होकर बनाने आदि में काफी मेहनत लगती है। और ऊपर से गर्मियों का मौसम है। तो इतने पसीने आते हैं। कि उसे कई बार घमोरियां और खुजली हो जाती है। लेकिन उसका कोई और सहारा नहीं है। इस वजह से मजबूरी वश उसे यह काम करना पड़ता है। इसके अलावा सराय काले खां फ्लाईओवर और रैन बसेरों में रहने वाले कई बच्चों से बातचीत की जिन्होंने बताया। कि आजकल स्टेशनों पर या सड़कों पर ज्यादा कबाड़ा नहीं मिलता है। इस वजह से उन्हें कबाडे के लिए दूर दूर तक फेरिया मारनी पड़ती है। जिस वजह से वह पसीनो में पूरी तरहां से भीग जाते हैं। और उन्हें कई दफा टांगों में दाद खाज खुजली और कंधे पर अधिक समय तक कट्टा टांगें टांगें यहां वहां फेरी लगाने की वजह से उनका कंधा छिल भी जाता है। और तो और कई दफा उन्हें ज्यादा समय तक धूप में घूमने की वजह से चक्कर भी आने लगते हैं। और अनजान जगह पर जाकर कबाड़ा बिनने से उन्हें कुत्तों के काटने का खतरा भी लगातार बना रहता है!

इसी कड़ी में 13 वर्षीय रानी परिवर्तित नाम ने बताया कि जब से लॉकडाउन लगा है हमें खाने को नहीं मिला और दिन-रात हम लोग अपनी छोटी सी झुग्गियों में रहते हैं बढ़ती धूप और गमी कें कारण ना हीं हम सही से सो पा रहे हैं और ना हीं हमें समय पर खाना मिल रहा है! हमारे माता-पिता का काम छूट जाने के कारण अब हमारे माता-पिता जो उधार लेकर आए थे वह भी खत्म हो रहा है हमनहीं समझ पा रहे कि हम क्या करें!12 वर्षीयरोहन परिवर्तितनामनेबतायाकिजबसेलॉकडा

शेष पृष्ठ 2 पर

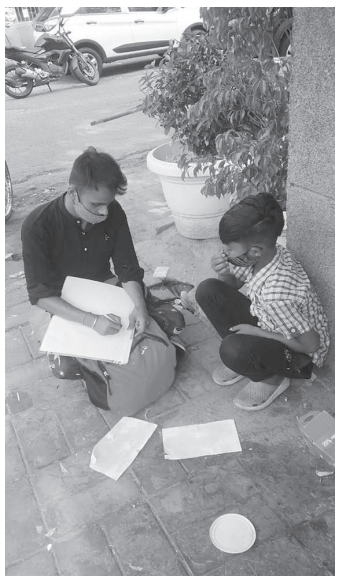

सड़क के किनारे बच्चों को रहने का ठिकाना मिलना भी हो रहा है मुश्किल

बातूनी रिपोर्टर तोहिद

बालकनामा के पत्रकार ने दक्षिण दिल्ली में बच्चों के साथ बैठक की और उनके साथ उनकी समस्या को लेकर चर्चा की जिसमे बच्चों ने बताया कि भईया हम कबाड़ा बीनने का काम करते हैं जिसके लिए हम सुबह ही मार्किट में आ जाते हैं और पूरा दिन जगह-जगह घूमकर कर कबाड़ा इकट्ठा करते हैं! लेकिन इस बार के लॉक डाउन मे हम बिल्कुल कमाई नहीं कर पा रहे हैं क्यूंकि हमारे बाहर निकलने के लिए ई पास होना बहुत जरूरी है जोकि हमारे पास था ही नही इस बार लॉक डाउन खुलने के बाद हमने अपना कामदोवारा करना चाहा लेकिन पुलिस वाले सर ने जिस जगह हम डेरा लगाते थे
उसी जगह पर पूरे जगह भारी भारी और बड़े बड़े गमले रख दिए हैं और पुलिस वाले सर ने बोला कि अब आप यहां नहीं रहोगे क्योंकि आपके रहने और काम करने से यहां बहुत कूड़ाकचड़ा फैलता है और इस जगह के कम्युनिटी वाले लोग हमें शिकायत करते हैं इसीलिए कोई और जगह जाओ लेकिन भईया हम यहां से कहां जाएंगे यहां पर कई फैमिली ऐसी भी है जिनके पास छोटे बच्चे हैं अगर वह फेरी पर चले भी जाते हैं तो उनके बच्चों को हम संभाल लेते हैं अगर हम अलग-अलग जगह काम करने को निकल जाए तो एक दूसरे का सपोर्ट नहीं कर पाएंगे
मैं पुलिस वाले सर से माफी मांगते हुए कहता हूं कि सर प्लीज हमें इस जगह से ना हटाए हमारी मजबूरी को देखते हुए हम आपके शुक्र गुजार रहेंगे !यदि आपने हमे यहन हटा दिया तो कोरोना काल जैसे परिस्थिति में हम कहाँ जायेंगे?

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

एक तो करोना दूसरी गर्मी बच्चो का हुआ बुरा हाल

पृष्ठ 1 का शेष

उनलगाहै हम बहुत परेशान हैं हमारे माता-पिता बुजुर्ग हैं और वह दिहाड़ी मजदूरी कर हमारा जीवन यापन करते थे लेकिन जब से लॉकडाउन लगा है हम लोग बाहर नहीं निकल रहे हैं जो हमारे पास पैसे थे वह सब खत्म हो गए है और इस बार हमें कोई खाने के लिए भी नहीं पूछ रहा है उपर से इस भरी धुप में हमारा जीना दुर्भर हो गया! 35 वर्षीयमुन्नीदेवीपरिवर्तितनाम ने बताया हम लोग इस झुग्गी में रहते है और आसपास के कोठियों में वह अपार्टमेंट में झाड़ू पोछा लगाने का काम करते हैं जब से करोना महामारी तेजी से बढ़ा और लॉकडाउन लगा हम सबका काम छूट गया और अब हम मालिक के पास जाते हैं तो वह हमें मना करते हैं कि जब पूरी तरीके से महामारी खत्म हो जाएगा तब हम तुम्हें अपने पास काम पर रखेंगे! इसलिए अब हम तपती धुप में अपने लिए काम की तलश कर रहे है! कुछ बच्चो ने कबाड़ा बिनना शुरू कर दिया है क्युंकी उन्हें कोई काम नहीं मिला इसलिए उन्होंने कबाड़े का काम करना शुरू कर दिया है बच्चे कडकती धुप में इधर उधर कबाड़े की तलाश करते हैं जिसमे उनका बुरा हाल हो जाता है वह भूखे प्यासे अपने काम में जुटे रहते हैं! कुछ बच्चो ने इस महावारी में पलायन कर गांव भी चले गए तो वहीं दूसरी तरफ जो काफी गरीब लोग थे उनका झुग्गी किराया कर्ज हो गया और बच्चे खाने के लिए मजबूर है! गर्मी के चलते कोई भी व्यक्ति हम खाना देने भी नहीं आते और ना ही कोई हमे स्वास्थ्य सेवाए मिल रही है जब भी बच्चा गर्मी की तपन से बीमार होता है तो बच्चो को मेडिकल सेवाएं भी जल्द नहीं मिल रही है गर्मी से होने वाली घमोरियां ,फुंसी, फोड़े बच्चो के शरीर में उभर रहे हैं लेकिन बावजूद इसके बच्चो को किसी भी प्रकार से मेडिकल सेवाए नहीं मिल रही है इस प्रकार बच्चे इस कोरोना माहमारी के चलते समस्याओ का सामना कर रहे हैं! इस समय पहले की तरह बच्चो के यहां कोई मदद के लिए भी नहीं आ रहा है! जिससे बच्चो को खाने पीने की सुविधा दी जा सके! वहीं कई बच्चों का कहना था कि हमारे पास यहां पर खेलने के लिए भी मना करते हैं इस समय हमारी पढ़ाई भी बंद है हमारा स्कूल भी बंद है स्कूल की तरफ से कई बार बीच-बीच में सर आते हैं और हाल-चाल पूछ कर चले जाते हैं हम पूरे दिन अपने झुग्गियो के आस-पास रहते हैं और कबाड़ा बिनकर अपना जीवन चला रहे हैं!15 वर्षीय कोहिनूर जिनके परिवार में 9 सदस्य है कोहिनूर शोरूम में साफ सफाई का काम करता है यह रहने वाले राजस्थान के हैं कोहिनूर ने आगे बताते हुए बताया कि इस गर्मी और लॉकडाउन में मुझे व मेरे परिवार के सदस्यों को काफी दिक्कतें आई मेरे पिताजी की तबीयत बहुत ही ज्यादा खराब हो गई थी क्योंकि वह हर प्रकार का नशा करते थे जिस वजह से काला पीलिया हो गया था पापा का इलाज हमने सरकारी अस्पताल में करवाया क्योंकि हमारे पास रोजगार ना होने की वजह से धनराशि की कमी बहुत ही ज्यादा थी लेकिन इलाज कराने के दौरान कई प्रकार की दिक्कतें आई क्यूकी इतनी जायदा गर्मी है और पापा को लेकर इस तपती गर्मी में भाग दौड़ करना पड़ रहा था और ऐसे में डॉक्टर भी समय पर एडमिट नहीं कर रहे थे और ना ही कोई भी रिपोर्ट समय पर दे रहे थे पापा की तबियत ठीक होने की जगह और जायदा बिगड़ती जा रही थी काफी कठिनाइयों के बाद पापा का इलाज हो गया अब वह ठीक है लेकिन इस लॉक डाउन और गर्मी में हमे बहुत ही परेशानी आई हमने यह भी नही सोचा की हमे इस गर्मी से लू लग जाएगी या फिर हम इस वायरस का शिकार हो जायेंगे

14 वर्षीय रोशनी नामक की एक बच्ची ने बताया की हमारे परिवार में 6 सदस्य हैं पिछले लॉकडाउन के कारण घर की परिस्थिति ठीक से नहीं चल रही थी जिसको देखते हुए मैंने कोठी में काम करना शुरू कर दिया था लेकिन फिर से जब लोक डाउन व करोना संक्रमित लोगों की गिनती ज्यादा में आने लगी तब हमारे कोठी वाली ने हमें काम पर आने से मना कर दिया था जिसमे मुझे (एक कोठी में 12 सो) और दूसरी कोठी में 14 सो रुपए परमाह मुझे दिए जाते थे जिससे कि मैं थोड़ा बहुत अपने घर में सहयोग कर पाती थी काम छूट जाने के बाद पूरा दिन मैं अपने घर में रहकर छोटे बहन भाइयों को देखना और कामों की तलाश करने लगी लेकिन कही भी काम नहीं मिल रहा था ऊपर से हमने एक छोटी से जुग्गी प्लास्टिक की तिरपाल से बना रखी है जिसमे रहना ऐसा लगता है की हम किसी तपती हुई भट्टी में बैठे हुए है जब जब सूरज का तापमान भड़ता जाता है तब तब जुग्गी में उबाल सी होने लग जाती है और हम बहन भाइयों को गर्मी से पूरे शरीर दाने भी निकल गए है!

16 वर्षीय नेहा ने बताया की घर में सहयोग देने के लिए हम परिवार वालो ने मिलकर बाहर चौमिन और मोमोस की दुकान खोली थी दुकान में तैयारी करने के लिए हमे 12 बजे से लग जाना पड़ता है तब जाकर हम 4 बजे से दुकान लगा पाते थे लेकिन दुकान लगाने के दौरान भी काफी परेशानी आती थी क्यूकि रात 11 बजे तकचूलेह के आगे खड़ा रहना पड़ता था एक तो वैसी ही गर्मी से बुरा हाल हो जाता है ऊपर से चूल्हे की गर्मी सहनी पड़ती है दुकान बंद करते करते शाम तक गर्मी से सिर दुखने लग जाता है और जो दुकान की आमदनी से घर में थोड़ा सहयोग हो जाता था लेकिन इस बार लोकडाउन लग जाने की वजह से बाहर निकलना बिल्कुल मना था जिस वजह से हम दुकान भी ना लगा पाए और घर की हालत भी ठीक से नहीं चल पा रही है! 15 वर्षीय गुनगुन ने बताया कि मैं मम्मी के साथ सेंट्रल मार्केट में लोक डाउन से पहले खिलौने गुब्बारे वह भीख मांगने का काम करती थी जिससे कि मैं अपनी मम्मी को सहयोग दे पाती थी क्योंकि मेरा भाई गलत लोगों के संगत में पड़ गया है वह कभी कभी घर भी नहीं आता है और पापा भी घर पर ही रहते हैं किसी भी प्रकार का कार्य नहीं करते है और इस लॉक डाउन में मैं और मेरी बहन पास के मार्केट में भीख मांगने भी चली गई जहाँ हमेंसडको पर बहुत गर्मी भी लगती है जहाँ जल्दी पीने के पानी भी नहीं मिलता हम भूखे प्यासे भटकते रहते है ऊपर से लोग सहयोग भी नही करते है इस वायरस की डर से दूर दूर ही रहते है! हमें अपने आसपास भटकने नहीं देते हैं!

15 वर्षीय समीर ने बताया कि इस बार गर्मी आते ही लॉकडाउन लगा दिया गया उससे पहले भी मेरे पास ढोल बजाने का बहुत ही कम काम आ रहा था!लेकिन करोना वायरस की वजह से ऊपर लॉक डाउन लग गया! अभी भी लोगो से बात करके यह ही पता लगाता रहता हु की कही से काम आ जाए मेरी मम्मी की भी तबीयत ठीक नहीं चल रही है ऐसे में काफी परेशानी होती जा रही है और गर्मी में घूम घूम कर हालत भी ठीक नही चल रही है पता नही हम कब खुशहाल तरीके से रह पाएंगे?इस तपती गर्मी में पानी की किल्लत बच्चो को बेहाल कर रही है क्यूंकि बच्चो को पीने के लिए पानी भी नसीब नहीं हो रहा है! बच्चो को मजबूरन बहता हुआ पानी पीना पड रहा है जिससे बच्चे बीमार पड रहे हैं!

१२ वर्षीय ज्योति ने बताया की हम बच्चे रेन बसेरों में रहते हैं! लेकिन लाल बत्ती के इर्द गिर्द काम करते हैं इस दोरान हमें पानी खरीदकर पीना पड़ता है प्यास के मारे पानी की तलाश में इधर उधर भटकते रहते हैं! जब हमें पानी नहीं मिलता तब हमें पानी खरीदकर पीना पड़ता है!

शेफाली ने सुनाया बच्चो का दर्द

बालकनामा के पत्रकार ने दक्षिणी दिल्ली के एक स्थान पर सड़क व कामकाजी बच्चों से बीते लॉकडाउन से हुई परेशानी को लेकर विस्तार से चर्चा करी तो शेफाली ने बताया कि भईया हम मार्केट के अंदर गुब्बारे खिलौने सेल करने का काम करते हैं दिन भर जितना पैसा कमाते हैं उसी पैसे को लेकर शाम को अपने घर जाकर राशन पानी लाकर हम सभी परिवार खाते हैं हमारे परिवार में कुल 3 सदस्य है अभी कुछ दिन पहले ही लोग डाउन खुला है और काम भी बहुत कम चल रहा है ऐसे में पुलिस वाले भईया आकर हमें बहुत ज्यादा परेशान कर रहे हैं उनका कहना है कि करोना के केस बढ़ते जा रहे है इसलिए आप बच्चे यहां काम के इरादे से मत आया करो! यदि हम बच्चे काम नहीं करेंगे तो हमारा गुजारा होना मुस्किल हो जाएगा हर रोज हम अपनी आमदनी नहीं कमा पाते हैं जिससे कि परेशानियां कम होने की जगह हमारी परेशानियां बढ़ती ही जा रही है ऐसे में हमारा काम बिल्कुल ही रुक गया है! हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे बेहद इस समस्या से जूझ रहे हैं ऐसे में मैं उन सभी बच्चों के लिए सरकार तक यह बात पहुंचाना चाहती हूं कि हम जैसे बच्चे जिनके परिवार में अनेक सदस्य होने के कारण अगर खाने खर्चे की दिक्कत हो रही हो ओर ऐसे परिवार जहाँ एक दिन काम पर ना जाए तो काफी नुकसान होता है इन सभी के लिए मैंगुजारिश करती हूं कि सरकार कोई ऐसी स्किम बनाए जिससे हमें राहत मिले जैसे महीने भर का राशन सड़क एवं कामकाजी बच्चो के घर घर पहुँचाया जाये!

कब मिलेगा स्वच्छ पानी?

रिपोर्टर दीपक

दक्षिणी दिल्ली में नेहरू नगर नामक जगह पर रह रहे सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ बालकनामा के पत्रकार ने बैठक में चर्चा करी तब साक्षी नाम की बच्ची ने बताया कि भईया हमारे यहां की सबसे बड़ी परेशानी यह है कि हमारे यहां पर 400 से लेकर 500 तक जुग्गी हैं और पूरी झुग्गी में दो ही नल है इस नल में एक ही टाइम शाम को पानी आता है और सभी झुग्गी वाले अपना अपना पानी भरने वाला बर्तन लेकर इकट्ठा हो जाते हैं जिस वजह से वहां बहुत भीड़ भी हो जाते हैं और हम पहले इस नल से ही पानी पीते थे व खाना बनाते थे लेकिन बीच-बीच में इस नल में बहुत ही गंदा पानी आने लग गया कीड़े भी आने लग गए थे और साथ में ही शोचालय का मल भी आने लग गया इसको देखते हुए हमारी पूरी जुग्गी वालो को बाहार से पानी खरीदकर कर पीना पड़ रहा है 20 लीटर पानी 25 में दिया जाता है और यहां सभी फैमिली में सदस्य ज्यादा होने के कारण एक पानी वाले केन से पूरा दिन नहीं निकलता है सभी को दो या तीन खरीदने पड़ते हैं लेकिन अब हम रोज रोज पानी के लिए पैसा देकर थक चुके हैं हमारे यहां पर पिछले साल सरकार गलियों में नल भी लगाए थे लेकिन उसमें आज तक पानी नहीं आया जब वोट लेने का समय होता है तब वह लोग आकर थोड़ा बहुत नल के पास प्लास्टर करके चले जाते हैं और उसके बाद ना तो पानी का पता रहता है और ना ही किसी और सुविधा का पता चलता है! अब हम यह चाहते हैं सरकार इस चीज पर जरूर ध्यान दें क्योंकि हम लोग रोज कमाने व खाने वाले हैं हम आधे से ज्यादा पैसा पानी में ही दे देंगे तो हम खाएंगे क्या सरकार से गुजारिश करती हूं कि इस समस्या का हल करके हमें पानी की पूर्ति करें! हम बच्चों के घरो में पहले ही खाने पीने की किल्लत हो रही है लेकिन अब जब पानी के लिए प्यासे रहेंगे तो हम बच्चो के स्वास्थ्य का क्या होगा?

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

देख कर अनदेखी बनी सरकार!

बातूनी रिपोर्टर पूजा, रिपोर्टर दीपक

बालकनामा के पत्रकार ने पश्चिमी दिल्ली के स्थान पर पिछले दिनों गुजरे एक भयंकर आग के हादसे से हुई परेशानी को लेकर वर्तमान में उनकी स्थिति को लेकर चर्चा की गई ग्रुप में बैठे एक पूजा नाम की बच्ची ने अपनी बात रखी पूजा ने बातया जैसा की आप सब को पता है की पिछले कुछ दिनों में उस के आग हादसे में 30 से 40 परिवारों का पूरा घर, समान उनकी जमा पुंज, उनका कारोबार अथवा उनकी जरूरतों के सारे सामान जल कर राख हो गया जब आग लगी थी तब थोड़ा बहुत सही होगा संस्था और गवर्नमेंट की तरफ से मिला था उस वक्त मीडिया भी आकर हमारे सिचुएशन को कैप्चर कर रही थी लेकिन थोड़े ही दिन में सब बदल सा गया

बच्चे ने आगे बताते हुए कहा कि यही 2 साल पहले जब हमारी जुग्गी में इसी प्रकार आग लग कर सब कुछ राख हो गया था तब गवर्नमेंट ने पर परिवारों को 25-25 हजार रुपए की राशि देखकर सहयोग किया था और यह बहुत ही जल्दी परिवारों को प्राप्त भी हो गया था जिससे कि परिवारों को सुविधा भी मिली थी लेकिन इस बार के परिस्थिति में ऐसा कुछ भी नहीं है मैं सरकार से कहना चाहती हूँ कि हमें इस पेंडमिक के समय सहयोग क्यों नहीं मिल रहा है क्यों सरकार हम बच्चो के परिवारों को देख कर अनदेखा कर रही हैं! जबकि इस वक्त तो खाने तक पर दिक्कत हो रखी इस महामारी के वजह से तो हम अपनी जरूरतों का सामान व अपने घर की पूर्ति भी ठीक से नहीं कर पा रहे हैं!

मैं सरकार से गुजारिश करूंगी कि इस गंभीर समस्या का समाधान जल्द से जल्द निकाल कर परिवारों व बच्चों को सहयोग करें! जिनके बच्चो के परिवारों की गंभीर स्थति हिया वह उनके लिए मदद पहुंचाए!

आखिर कब सुनेगी MCD हमारी पुकार

बातूनी रिपोर्टर नंदनी /समीर

दक्षिणी दिल्ली मैं नेहरू नगर नामक जगह पर रह रहे बच्चों के साथ बालकनामा के पत्रकार ने उनकी परेशानियां पर चर्चा की गयी जिसमें कई बच्चों ने अपने यहां की तरह तरह की परेशानियां को बताया तब उन्ही बच्चो से नंदनी नाम की बच्ची ने बताया कि भाईय हमारे यहां पर जो नाले हैं वह बहुत ही गंदे हैं नाले का सारा कचरा बाहर रहता और नाले ढके हुए भी नहीं है और साथ में सुलभ शौचालय भी है उसकी भी गंदगी रास्ते पर बहती रहती है और शौचालय में भी बहुत ज्यादा गंदगी है वहां पर वर्कर भी है लेकिन वह लोग जल्दी सफाई नहीं करते और कभी-कभी तो शौचालय में पानी भी नहीं आता है इस गंदगी के कारण कई बच्चों को स्वच्छ सांस लेने में भी परेशानी हो रही है बच्चों को कई प्रकार के इंफेक्शन हो रहा है जैसे कि कई बच्चों को दाद ,खुजली एवं स्किन का निकलना बच्चे पास के मेडिकल स्टोर से दवाई लाते है तब जाकर ठीक होता है और काफी पैसा लगाना पड़ता है तब जाकर यह खत्म होता है मैं बालकनामा अखबार के माध्यम से साफ सफाई कर्मचारी तक संदेश पहुंचाना चाहती हूं ताकि मेरे यहां कि यह परेशानी खत्म करे और हमे रहने के लिए एक स्वच्छ जगह मिल पाए!

बिजली आयोग की बढ़ती मनमानी से परेशान हुए मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्ट गूंजा , रिपोर्टर दीपक

सड़क व कामकाजी बच्चों से वर्तमान में हो रही परेशानी को लेकर चर्चा करें जिसमें पश्चिमी दिल्ली के स्थान से बड़ी ही गंभीर बात निकल कर सामने आई बच्चे ने बताया कि भईया इस वक्त की दौड़ में परेशानी कम होने की वजह बढ़ती ही जा रही है सबके जीवन इस महामारी ने कई बच्चों के जीवन को बदल कर ही रख दिया है बच्चे ने आगे बताते हुए कहा कि हूकर इस महीने बिजली का बिल 15000 आया है जबकि हम ज्यादा बिजली यूज भी नहीं करते मेरे पिताजी तोनहीं है मेरी माता ने कहीं से पैसे का इंतजाम करके बिजली दफ्तर से आए ऑफिसर्स को 6500दिए बदले में उन्होंने एक स्लीप भी दी लेकिन मेरी माता अशिक्षित होने के कारण समझ नहीं पाए कि उस दस्तावेज में क्या लिखा हुआ क्या है 6500 जिस व्यक्ति को दिए थे वह व्यक्ति उस पैसे को लेकर भाग गया है बिजली दफ्तर से फोन आया है कि आपके यहां से किसी भी प्रकार का राशि धन हमें प्राप्त नहीं हुआ है आप जल्द से जल्द हमें बताई गई राशि को समय रहते भरे मम्मी का बिल्कुल भी कबाड़ा का काम नहीं चल रहा है हमारा पूरा दिन घर पर ही बैठे हुए गुजर जाता है बच्चे ने आगे बताते हुए कहा कि हमारी जुग्गी में कई ऐसे भी बच्चे हैं जिनका बिजली का बिल काफी बढ़ कर आया है हम सब इन परेशानियों से जूझ रहे हैं हम अपनी इस समस्या का हल कैसे करें ? कहां से हम बिजली के बिल की राशि का भुगतान करेंगे ? इस वक्त तो बहुत मुश्किल से हमारे खाने पीने का गुजरा हो रहा है ऐसे में हम बिजली के बिल का भार कैसे यथा पाएंगे ? हमारे पास ना काम है ना ही कोई हमारे पास जमा पूंजी है बच्चो ने कहा कि महामारी ने तो वैसे ही हमारी खुशी छीन अब सरकार से गुजारिश करना चाहूंगी कि हमें इस प्रकार से परेशान ना करें

पैसा कमाने के चक्कर में लगी जान पर बाजी

रिपोर्टर किशन वह बातूनी रिपोर्टर अभिनंदन

जैसा कि आप जानते हैं इस समय सड़क एवं कामकाजी बच्चे कितनी परेशानियों का सामना कर रहे हैं ऐसे ही हमारे पत्रकारों ने कुछ बच्चों से फोन के माध्यम से संपर्क किया संपर्क करने के दौरान बच्चों ने अपनी परेशानी बताते हुए कहा बच्चे का नाम अभिनंदन उमर 15 वर्ष का है वह साइकिल की दुकान में काम करता है अभिनंदन सुबह के 9:00 बजे से शाम को 7:00 बजे तक साइकिल की दुकान में काम करता है अभिनंदन ने बताया भैया लॉकडाउन में हमें काफी सारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था इस कारण मुझे साइकिल की दुकान में काम करना पड़ा और अभिनंदन को एक दिन के 100 मिलते हैं और उसी से घर का वह अपना खर्चा चलाता है ऐसे ही एक दिन अभिनंदन वह उसका मालिक मोटरसाइकिल से घर की ओर आ रहे थे तभी अचानक से अभिनंदन वह उसके मालिक का चार पहिया कि गाड़ी से दोनों का एक्सीडेंट हो गया एक्सीडेंट होने के दौरान अभिनंदन की एक टांग की हड्डी टूट गई और अभिनंदन के मालिक की भी एक टांग की हड्डी टूट गई अभिनंदन ने बताया भैया जब एक्सीडेंट हो गया था तो हमें कुछ भी नजर नहीं आया जिससे कि हम एक सड़क के किनारे पड़े हुए थे वहां से गांव के कुछ लोग घर की ओर जा रहे थे तभी उन्होंने हमें ऐसी हालत में देखा और तुरंत ही घर पर पिताजी को फोन लगाया फोन लगाने के बाद पिताजी आए और उन्होंने ऐसे देखा देखने के बाद फिर एंबुलेंस को फोन किया और फिर एंबुलेंस से हॉस्पिटल की और गए हॉस्पिटल गए तो उन लोगों ने इलाज करने से मना कर दिया और मुझे झांसी की ओर हॉस्पिटलों में भेज दिया जिससे कि वहां पर हमारे पिताजी ने मेरा इलाज करवाया परंतु टांग की हड्डी में चांदी की सरिया पड़ी और वह सरिया काफी महंगी थी वह सरिया 65000 की थी जिस कारण मेरे पिताजी के पास इतने पैसे नहीं थे इलाज तो करवाना जरूरी था इस कारण मेरे पिताजी ने 40000 में एक खेत बेच दिया और जब भी कुछ पैसे कम पड़ रहे थे तो पिताजी ने कुछ पैसे लोगों से ब्याज पर उठा लिए और फिर मेरा इलाज करवाया!

शिक्षा को छोड़कर बच्चे बढे कामकाज की ओर

रिपोर्टर किशन

यह खबर दिल्ली के एक इलाके की है हमारे कुछ पत्रकारों ने बच्चों से फोन के माध्यम से बातचीत की और उनकी समस्या जानने की कोशिश की बच्चों से बात करने के दौरान बच्चों ने बताया भैया लॉकडाउन से पहले हम कुछ बच्चे लगभग 8 से 10 बच्चे कोठियों में काम करने जाते थे और साथ में हमारी माताजी भी कोठियों में काम करने जाती थी हम बच्चे माता जी की मदद करने जाते थे जैसे कि आपको पता है यदि हमारी माताजी एक या दो कंपनियों में काम करने जाती है तो ज्यादा घर का खर्चा होने के कारण घर का गुजारा नहीं हो पाता है इस कारण हमारी माता जी तीन से चार घर में काम करती हैं जब थोड़ा बहुत घर का खर्चा चल पाता है यदि हमारी माता जी चार घर में काम करने जाती हैं तो हमारी माता जी दो घर में काम करने चली जाती हैं और दो घर में हम लोग काम करने चले जाते हैं समस्या इस बात की है की इस समय लॉकडाउन लगने के कारण पिछली बार की तरह कंपनियों में जाने की इजाजत नहीं दी जा रही थी इस कारण हमारी माता जी का कंपनियों में से काम छूट गया और जब काम छूट गया तो घर में काफी समस्याएं होने लगी जिस कारण हमें कबाड़ी का काम करना पड़ा बातचीत करने के दौरान बच्चों से यह भी पता चला जो बच्चे लॉकडाउन से पहले पढ़ाई कर रहे थे और कुछ बच्चों का स्कूल में चेतना संस्था के भैया दीदी ने दाखिला भी करवा दिया था तो लॉकडाउन में बच्चों के घरों में काफी समस्याएं होने लगी थी जिस कारण बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करने लगे आप लोगों ने दिल्ली में कुछ ऐसे कूड़ेदान देखे होंगे जिसमें वहां का सारा कूड़ा एक कूड़ेदान में इकट्ठा किया जाता है और कुछ बच्चे उस कूड़ेदान में से भी कूड़ा इकट्ठा करके लाते हैं और कुछ बच्चे कंपनियों में से भी कूड़ा लेकर आते हैं और फिर एक जगह उस कूड़े को रखकर उस कूड़े में से छानबीन करते हैं छानबीन करने के बाद वह अपने ठेकेदार को कूड़ा दे देते हैं जिससे कि उस कूड़े के 1 दिन में सो रुपए तक मिल जाते हैं और उन पैसों से हम बच्चों का घर का खर्चा चलता है!

फिर एक बार बच्चों पर नशे का वार

रिपोर्टर रवि

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन में एक जो सबसे बड़ी और मुख्य चुनौती होती है। वह होती है। नशा और यह जरूरी नहीं कि हर बच्चा नशा ही करता हो। वह जब अपने घर से किसी भी वजह से घर को छोड़कर आया हो तो वह बच्चा नशा करता हो। लेकिन बाद में धीरे-धीरे 10 में से लगभग 8 बच्चे नशे की लत में पड़ जाते हैं।और इसी कारण को जानने के लिए कार्यकर्ता ने बच्चों से बातचीत करके इसके कारण को जानने की। कोशिश की तो कई बच्चों ने अपने साथ रहने वाले बच्चों को देखकर, कई बार बड़े लड़कों के जबरदस्ती या कहने पर, तथा कई बार किसी चिंता को लेकर, या फिर मजे में, इस तरह से अलग अलग तरीकों से नशे का पहली बार इस्तेमाल किया।और फिर धीरे धीरे यह उनकी लत बन गई।

निजामुद्दीन के सराय काले खां में रहने वाले बदला हुआ नाम असलम, दिनेश, राकेश, रफीक, आदि बच्चों ने बताया कि जब लॉकडाउन लगा हुआ था। उस दौरान भी नशा मिलता था। लेकिन वह काफी महंगा था।

और स्टेशनों पर एवं फ्लाईओवर के नीचे बोतले या अन्य कबाड़े का सामान नहीं मिलता था। जिस वजह से वह महंगा नशा उनके खरीदना बस की बात नहीं थी। और इसी वजह से उन्होंने नशा करना छोड़ दिया था।या कम कर दिया था। लेकिन अब दोबारा से सब कुछ खुल गया है। और पहले की तरह सुचारू रूप से सब चीजें चलने लगी है। तो वह बालक भी अब अपने काम धंधे के लिए घरों से बाहर निकलने लगे हैं। और दोबारा से वह बच्चे ट्यूब, गांजा, स्मेक,तथा और भी कई प्रकार के नशो का दुबारा से सेवन करने लगे हैं। और यह एक बहुत गंभीर विषय है। क्योंकि हर 10 में से 8 बच्चे नशे का शिकार हैं।

कोरोना के गंभीर परिणामों से बच्चे हैं बेखबर

रिपोर्टर रवि

हमारे कार्यकर्ता ने साईं बाबा मंदिर के आस पास झुग्गी बस्ती में रहने वाले तथा वहां मांगने वाले बच्चों की स्थिति को जानने के लिए एक सर्वे किया। जिसके दौरान कार्यकर्ता ने वहां पर काफी ज्यादा बड़े लोगों को एवं बच्चों को बिना मास्क लगाए हुए मांगते हुए देखा जब कार्यकर्ता ने बच्चों को यह बात समझाने की कोशिश की कि इस समय कोरोना की तीसरी लहर आने वाली है जो पहले वाली से भी ज्यादा घातक है। इसलिए आपको बिना मास्क लगाए अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। और बिना वजह भी बाहर नहीं निकलना चाहिए।

तब बच्चों ने मास्क पहन तो लिए लेकिन साईं बाबा मंदिर पर और उसके आसपास मांगने वाले बच्चों ने बताया। कि कोरोनावायरस अमीरों की बीमारी है। यह बीमारी हम गरीब लोगों को नहीं लगती है। और अभी तलक हमारे यहां एक भी कोरोना का मरीज नहीं मिला है। यह बस एक अफवाह है। और कुछ नहीं लेकिन फिर कार्यकर्ता ने बच्चों को समझाया कि यह अफवाह नहीं है। बल्कि यह सच बात है। और अगर यह अफवाह भी है। तो आपको मास्क पहनने में क्या दिक्कत है। क्योंकि आप बच्चे हो और सारा दिन सड़क पर काम करते हो इसलिए धूल, मिट्टी, पोलूशन, सांस के द्वारा आपके शरीर में जाता है, अगर आप मास्क लगाओगे तो आप धूल मिट्टी गाड़ी के धुंए आदि। से बचे रहोगे और स्वस्थ रहोगे इसलिए आपको मांसक लगाना जरूरी है। फिर बच्चों ने कहा कि भईया अब से हम मास्क जेबों में नहीं रखेंगे बल्कि मूंह पर लगाएंगे।

इस समय सब्जी फल परचून की दुकान के अलावा और कौन सा दूसरा कार्य करें

रिपोर्टर किशन वह बातूनी रिपोर्टर मुकुल

यह खबर नोएडा के कुछ बच्चों की है हमारे पत्रकारों ने कुछ बच्चों से फोन के माध्यम से संपर्क किया संपर्क करने के दौरान बच्चों की परेशानी जानने की कोशिश भी की बच्चों ने अपनी परेशानियों को बताते हुए कहा भैया जैसा कि आप जानते हैं इस समय कोरोना महामारी के दौरान कितनी परेशानियों का सामना कर रहे हैं हम बच्चे और फिर बच्चों ने बताया भैया जैसा कि आप जानते हैं इस समय ज्यादा मात्रा में दुकाने नहीं खुल रही हैं और ना ही ज्यादा रेडि लग रही हैं इस समय परचून की दुकान फल की रेडी और सब्जी की रेडी बस यही चीज थोड़ा बहुत खुल रही हैं परंतु यह दुकान और रेडी थोड़ा बहुत पुलिस वालों के कारण डर डर के खोल रहे हैं बच्चों ने बताया भैया लॉकडाउन से पहले हमारे यहां पर कई बच्चे कई प्रकार की रेडिया लगाते थे जैसे मोमोस अंडे चाऊमीन आदि परंतु समस्या इस बात की है कि इस समय लॉकडाउन लगा हुआ है और परचून की दुकान फल की दुकान और सब्जी की दुकान के अलावा कोई सी भी दुकान नहीं खुल रही हैं और एक 16 वर्ष के बालक ने बताया भैया जैसा कि इस समय सब्जी की दुकान और फल की दुकान और परचून की दुकान के अलाव कोई दुकान नहीं खुल रही है जो बच्चे मोमोज चाऊमीन अंडा आदि की दुकानें लगाते थे अब वह लोग भी सब्जी और फल की दुकान लगाने लगे हैं बच्चों का कहना है की इस समय सब्जी और फल की दुकान के अलावा कोई कामकाज नहीं है और यदि हम कोई दूसरा कार्य करते हैं तो पुलिस वाले इस समय नहीं करने देंगे इस कारण हमें यह काम करना पड़ रहा है और बच्चों ने यह भी बताया कि इस समय फल और सब्जी की दुकान ज्यादा मात्रा में बढ़ गए हैं जिससे कि हमारी दुकानदारी में भी थोड़ा बहुत फर्क पड़ रहा है जैसे कि हम पहले अच्छे से और ज्यादा मात्रा में सब्जियां बेचकर जाते थे परंतु इस समय वह सब रखी की रखी रह जाती हैं और इस समय हर कोई सब्जी और फल की दुकान ही लगा रहा है इस कारण हमारी दुकानदारी में फर्क पड़ा है और कोरोना के कारण हमें यह परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है!

अब हम क्या करें

रवि

जी हां एक तरफ वेसे ही सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत ही कम शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं। लेकिन अगर किसी के अभिभावकों में जागरूकता आने के बाद में वह अपने बच्चों को आगे बढ़ाना भी चाहे तो अब उनके लिए अब एक नई समस्या ने जन्म ले लिया है। वह समस्या है। किताबों का ना होना जी हां बिल्कुल सही सुना आपने सरकारी स्कूलों में आठवीं कक्षा के बाद किसी भी छात्र को किताबें नहीं दी जाती है। और इस बात की सत्यता को जानने के लिए हमारे रिपोर्टर ने एक नहीं दो नहीं बल्कि कई बच्चों से बच्चों तथा अभिभावकों से बातचीत की और उन्होंने बताया कि वह नौवीं कक्षा में पढ़ते हैं। उन सभी बच्चों ने बताया।

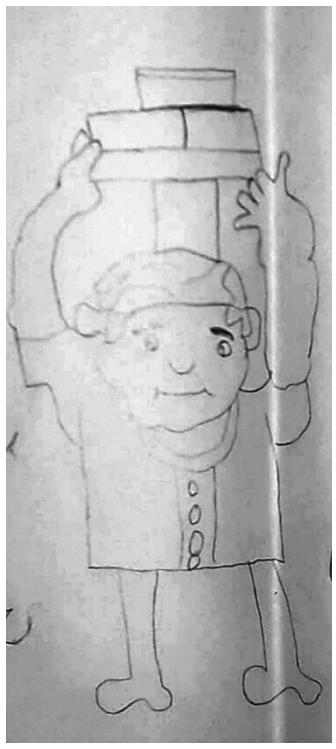

की भईया 9,10, और 11 वीं क्लास के बाद स्कूल की तरफ से कोई किताबें नहीं मिलती और उनके माता-पिता की स्थिति वर्तमान में इतनी सक्षम नहीं है। कि वह लोग उनके लिए किताबें खरीद सकें इस कारण वश वह पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। और उन्हें लगता है। कि आठवीं कक्षा से आगे अब वह पढ़ाई शायद ही कर पाएंगे।

स्लम एरिया पर लोकडाउन का प्रभाव बच्चे हुए भयभीत

रिपोर्टर विजय कुमार

गुरुग्राम शहर में झुग्गियों और बस्तियों में रहने वालों पर फिर से कोरोनावायरस को लेकर दहसक फैल हुई है । जिसकी वजह से अधिकतर बच्चो के माता पिता फिर से गांव जाने का पलायन कर रहे हैं । झुग्गियों व बस्तियों मे रहने वाले लोगों से बातचीत करने पर पता चला कि यदि लॉकडाउन इसी तरह से अधिक समय तक रहा तो वह गांव चले जाएंगे। ऐसे में यहां रहने वाले बच्चे और उनके परिवार भी सहम गए हैं ।

कोरोनावायरस को लेकर बच्चों में दहशत फैली हुई है। बच्चों और उनके माता पिता से संपर्क करने से पता चला कि बच्चों को डर लग रहा है कि यदि करोना हम पर हमला करेगा तो हम में

से कोई नहीं बचेगा। झुग्गियों में रहने वाले 13 वर्षीय नासिफ ने बताया कि फिर से करोना फैलने लगा है और हमें बहुत डर लग रहा है। उसने बताया कि अब हम घर से बाहर नहीं निकल रहे हैं क्योंकि अगर कोई करोना वायरस से संक्रमित हो तो उसके संपर्क में आने से हमें भी कोविड-19 हो जाएगा।इसलिए हम सभी से दूरी बनाकर रह रहे हैं । ऐसे ही जब चेतना NGO में पढ़ने वाले 12 वर्षीय समीरउद्दीन की माता जी से बात हुई तो उन्होंने बताया कि हम गांव जा रहे हैं क्योंकि हम फिर से उन समस्याओं का सामना नहीं करना चाहते जिन समस्याओं का हमने पिछले वर्ष बड़ी मुश्किल से सामना किया है। उन्हें डर है कि फिर से पिछली बार की तरह लॉकडाउन हमे कर्जदार बना देगा और यदि काम शुरू भी हुआ तो वह सारा पैसा कर्ज चुकाने में ही चला जाएगा। हम बच्चों का पालन पोषण करने करने में और जोगियों का किराया देने में असहनीय हैं। इससे अच्छा होगा कि हम गांव में सुरक्षित रहेंगे और अपने बच्चों का किसी भी प्रकार से पालन पोषण करने के लिए समर्थ रहेंगे।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

कैसे करें इन परेशानियों का सामना

रिपोर्टर किशन

हमारे पत्रकारों ने दिल्ली के कुछ कांटेक्ट पॉइंट के बच्चों से बात की और उनकी परेशानी जानने की कोशिश की जैसा कि आपको पता है इस समय कोरोना बीमारी के कारण काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ऐसे ही एक विषय पर हमारे पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की एक 10 वर्ष की बालिका ने बताया भैया जैसा कि आपको पता है इस समय हमें कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है जैसा कि कोरोना महामारी से पहले हमारे पिताजी बेलदारी का काम करते थे माताजी घर पर रहती थी परंतु समस्या इस बात की है कि इस समय कामकाज बंद हो गए हैं और दिल्ली में लॉकडाउन भी लगा हुआ है इस कारण हम कहीं पर कामकाज भी नहीं कर पा रहे हैं और हम बच्चे जिस मालिक के मकान के कमरे में रहते हैं उसके कमरे का किराया देना बहुत कठिन हो रहा है और दिल्ली में छोटे छोटे कमरे है और उस कमरे के ढाई हजार रुपे लगते हैं और बिजली बिल अलग है बिजली बिल महीने में 500 तक आ जाता है और इस समय कामकाज ना होने के कारण पैसे भी नहीं दे पा रहे हैं और बच्चों ने बताया भैया इस समय हमारे पास पैसे नहीं है और मकान मालिक रोजाना पैसों के लिए बोलता है हमारे पास पैसे नहीं है इस कारण हम कुछ नहीं बोल पाते हैं तो वह मालिक हमें कमरा खाली करने की धमकी देता है और बोलता है कि जल्द से जल्द कैसे पैसे लाकर दो मुझे वरना कमरा खाली कर दो और फिर हमारे पत्रकार ने बच्चों से कुछ सवाल भी किए सवाल किया की यदि मालिक आपको कमरा खाली करने के लिए बोलता है तो क्या आप फिर गांव जाएंगे बालिका ने बताया भैया इस समय ज्यादा बीमारी फैल रही है और इस समय हम गांव नहीं जाएंगे क्योंकि गांव जाने में काफी पैसा चाहिए और इतना पैसा हमारे पास इस समय नहीं है यदि हम चले भी जाते हैं कुछ पैसे लेकर तो हम आधे रास्ते ही पहुंच पाएंगे और फिर पैसे खत्म हो जाएंगे तो फिर हम घर कैसे पहुंचेंगे इस कारण हम अभी घर नहीं जाएंगे जब कोरोना बीमारी का कहर थोड़ा हल्का हो जाएगा तो फिर हम घर जाएंगे बच्चों का कहना है कि अगली बार जब लॉकडाउन लगा था तो उस समय काफी नियम निकाले गए थे और किराया माफ करने का भी नियम लागू किया गया था परंतु इस बार क्यों नहीं बच्चे यह चाहते हैं कि इस बार भी कुछ ऐसे नियम निकाले जाएं जिससे कि ज्यादा परेशानियों का सामना ना करना पड़े !

रायला की कहानी उसकी जुबानी

रिपोर्टर रवि

रायला 12 साल की है। यह पांचवी कक्षा में पढ़ती हैं। इसके पिताजी का नाम मुशाह खान है और उसकी माता जी का नाम सजेनुर बीबी है। इसका गांव गौरीपुर जिला दक्षिण दिनाजपुर पश्चिम बंगाल में है। इनके गांव में रोजगार ना होने के कारण इनके परिवार का पालन पोषण करना मुश्किल हो गया था। इसलिए उसके मम्मी पापा ने गुड़गांव आने की योजना बनाई और परिवार को लेकर गुडगांव आ गए। यहां आने के बाद कुछ समय बाद ही इसके माता-पिता को कोठियों में काम मिल गया और वह रोज काम पर जाने लगे। ऐसे में रायला की पढ़ाई छूट गई और वो यहां रहकर घर का काम करती और अपने छोटे भाई की देखभाल करती है। कुछ समय बाद रायला ने देखा कि यहाँ के अधिकांश बच्चे चेतना संस्था के सेंटर पर पढ़ने जाते हैं। बच्चों को देखकर रायला का भी पढ़ने का मन किया तो उसने अपने पड़ोस में रहने वाली मीना नाम की बच्ची जो पहले से ही ूी३ल्लंके सेंटर में इनरोल थी। उससे पूछा तो उसे मीना ने बताया कि हम यहां पढ़ते हैं, पढ़ने के साथ खेलते भी हैं। चाहे तो तुम भी हमारे साथ चल सकती हो। रायला ने सेंटर पर आने के लिए इच्छा जाहिर की। तब वह अपनी मम्मी के साथ आई। जब सेंटर की दीदी मेने रायला को देखा तो उससे पूछा कि क्या आप यहां पर नए आए हो और आप कहीं पढ़ने जाते हो या नहीं तब रायला ने जवाब दिया नहीं। मैं पहले गांव में पढ़ती थी लेकिन रोजगार के लिए हम यहां आ गए ।अब मैं यही रहूंगी और पढूंगी। तब दीदी ने जवाब दिया ठीक है आज से तुम्हें रोज यहां पढ़ने आना है। साथ में तुम्हें तरह तरह की गतिविधियां भी कराई जाएंगी और फिर तुम्हारा पास के सरकारी स्कूल में एडमिशन करा दिया जाएगा। यह सारी बातें सुनकर रायला और रायला की मम्मी भी सेंटर पर भेजने के लिए राजी हो गई। अब रायला रोज पढ़ने आने लगी। कुछ दिन बीतने के बाद रायला कहने लगी कि दीदी मुझे यहां पर अच्छा नहीं लगता तो दीदी ने उससे पूछा कि तुम्हें यहां अच्छा क्यों नहीं लगता तो उसने बताया कि यहां के लोग बहुत गंदे हैं हां लड़कियों को गंदी नजर से देखते हैं तब मैंने पूछा कि क्या तुम्हें कोई परेशानी है या फिर तुम्हें कोई परेशान करता है तो रायला का जवाब था नहीं। उसके बाद मैंने उसे समझाया कि तुम कभी किसी की बातों में मत आना और अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना। यदि तुम्हें या फिर किसी भी बच्चे को कोई भी परेशान करता है या कोई हानि पहुंचाता है तो मुझसे अवश्य साझा करना। अब रायला ने कहा के मुझे ूी३ल्लंसेंटर में पढ़ना बहुत अच्छा लगता है और रायला रोज पढ़ने आने लगीइस बार उसका दाखिला पांचवी कक्षा में हो गया। जल्दी ही रायला ने पांचवी कक्षा पास की है। अब उसका एडमिशन छठी क्लास में होने वाला है। रायला और उसका परिवार बहुत खुश है। रायला बड़ी होकर एक शिक्षिका बनना चाहती हैं और समाज की सेवा करना चाहती हैं।

बच्चे के साथ हुई घटना को सही रास्ता दिखाकर शिक्षा से जोड़ा गया !

रिपोर्टर विजय कुमार

एक दिन जब मैं कोने पे आधार कार्ड वाले के पास गया तो मैं बैठकर बातें कर रहा था. वहा से सामने एक खुली जगह जिसमें चार दीवारी हो रहीं थीं, लेकिन दुकान से सब कुछ दिखता था, मैंने और आधार कार्ड वाले ने हब्बल को उसके दो दोस्त के साथ गंदी हरकत करते हुए देखा मैंने उसको पहचान लिया था क्यूँकी वो हमारे सेंटर पर पढताथामेरे बुलाने पर वो भाग गया मैंने उनकी मम्मी को बुलाया और पूरी घटना बतायी साथ ही यह भी कहा कि बच्चे को प्यार से समझाओ तब मेरे पास आ कर बच्चा रोने लगा मैंने बच्चों को समझाते हुए कहासमाज इस तरह की हरकत को मान्यता नहीं देतातुम्हारी उम्र पढ़ने की है ना कि ऐसे काम करने क की उसके बाद वो बच्चा डेली चेतना की क्लास में आने लगा इस तरह की घटना मेरे पॉइंट पर हुए थी जो की मेरे थोड़े से प्रयास से उस घटना को रोका गया और बच्चे को समझाकर शिक्षा से जोड़ दिया गया !

तार छीलने के कार्यों में व्यस्त हो रहे हैं बच्चे

रिपोर्टर किशन वह बातूनी रिपोर्टर आलिया

चलो जानते हैं हमारे पत्रकारों ने कुछ बच्चों से फोन के माध्यम से बातचीत की और इस समय बच्चे क्या क्या कार्य कर रहे हैं उस चीज पर चर्चा की 14 वर्ष की बालिका ने बताया भैया हमारे यहां पर कई बच्चे तार छीलने का कार्य करते हैं जैसा कि आप जानते ही होंगे तार तो कई प्रकार के होते हैं जैसे तांबे का तार सिल्वर का तार आदि जैसा कि दिल्ली में तार के काफी सारे गोदाम है गोदाम में रहने वाले कुछ व्यकित इन लोगों को घर पर ही लाकर तार छीलने के लिए दे देते हैं बच्चों ने बताया भैया हमारे यहां पर जो भैया तार लेकर आते हैं वह 25 किलो से ऊपर तार लेकर आते हैं और तार काफी भारी भी होते हैं इस कारण हम लोग गोदाम में लेने नहीं जाते हैं तार का दाम 1 किलो तार छीलने पर 10 रूपए मिलते हैं इन बच्चों के घर में बच्चों के साथ-साथ भाई बहन भी मदद करते हैं और वह लोग भी यही कार्य करते हैं जैसे कि आपने देखा होगा कुछ तार बड़े या छोटे होते हैं तो यह लोग तार को कटर या पिलास से छीलते हैं और तारों को छीलते समय हाथ में भी लग जाते है बच्चों ने यह भी बताया भैया जैसा कि जब यह बच्चे पूरा तार छील लेते हैं और जो इन्हें पैसे मिलते हैं कुछ बच्चे अपने माता-पिता को पैसे दे देते हैं और कुछ बच्चे अपने खर्चे के लिए रख लेते हैं परंतु समस्या इस बात की है कि इस समय लॉकडाउन लगा हुआ है और लॉकडाउन के कारण तारों का काम नहीं आ रहा है इस कारण काफी परेशानियों का सामना भी करना पड़ रहा है !

बढ़ती बाल मजदूरी

रवि

एक बच्ची जिसका नाम रानी है।और एक बच्चा जिसका नाम आरती है। यह दोनों बालक अब बेलदारी और कोठी में साफ सफाई का काम करने लगे हैं। और जब कार्यकर्ता ने बढ़ती बाल मजदूरी के विषय में और गहराई से जानने के दूसरे कई और बच्चों से पता किया तो जाना कि इनके अलावा और भी कई ऐसे बच्चे हैं। जो कि लॉकडाउन के बाद आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण बाल मजदूरी में चले गए हैं। जिसकी वजह से उनके भविष्य पर काफी असर पड़ेगा। क्योंकि जब वह बच्चे पहले निजामुद्दीन स्टेशन पर कुछ कुछ कार्य करके अपना एवं अपने परिवार का गुजारा करते थे। तो उस समय उन्हें पढ़ाई खेल तथा अन्य गतिविधियों में भाग लेने का समय मिल जाया करता था। लेकिन अब वह बच्चे सुबह से शाम तक बंधुआ मजदूरों की तरह कार्य करते हैं। और शाम को जब वह घर आते हैं। तब तक वह काफी थक जाते हैं। इस वजह से वह बच्चे पढ़ाई लिखाई नहीं कर पा रहे हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

लोकडाउन से प्रभावित स्लम एरिया और सड़क एवं कामकाजी बच्चे

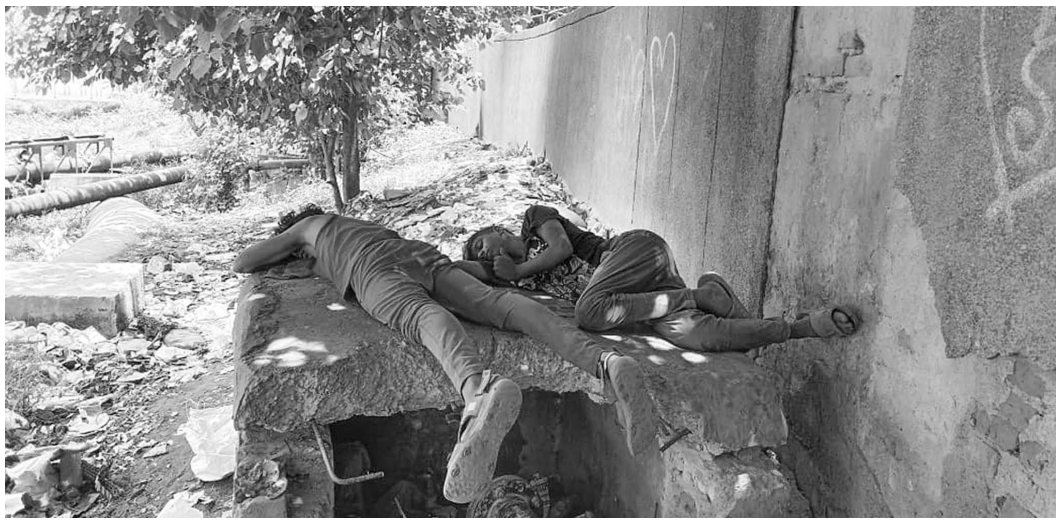

रिपोर्टर विजय कुमार

गुरुग्राम प्रोजेक्ट के चेतना एनजीओ के सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत करने से पता चला कि बच्चे लॉक डाउन की वजह से दुखी हैं क्योंकि उनका कहना है कि उनके माता-पिता हाउसकीपिंग या मजदूरी का काम करते हैं, जो लॉक डाउन की वजह से बंद हो गया है। ऐसी स्थिति में घर में बचा हुआ खाना खाने को मजबूर हैं। हमारे पेरेंट्स लोगों से कर्ज लेकर या दुकानदार से उधार लेकर हमारा पालन-पोषण कर रहे हैं। लॉक डाउन की वजह से वह पार्क भी नहीं जा पा रहे हैं और एक साथ खेलकूद भी नहीं पा रहे हैं। वह पढ़ने भी नहीं जा पा रहे हैं। घर में बैठकर बोर होने लगे हैं। इस साल कुछ बच्चों का सरकारी स्कूल में एडमिशन हुआ था, बच्चे बहुत उत्साहित थे कि इस बार वह स्कूल जा पाएंगे लेकिन लोक डाउन की वजह से उनके स्कूल भी बंद हो गए जिसकी वजह से उन्हें घर पर रहकर ही ऑनलाइन पढ़ाई करनी पड़ती है। स्कूल में दाखिला होने के बाद कुछ बच्चों को नई किताबें मिली थी उन्होंने स्कूल जाने के लिए अपने ड्रेस सिलवाए थे लेकिन लॉकडाउन की वजह से वह स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। यह उनके लिए बहुत ही दुखद समय का अनुभव है। जिसमें जिन बच्चों के घर में स्मार्टफोन नहीं है वह पढ़ भी नहीं पाते हैं। सभी बच्चे करोना वायरस से बहुत ही सहमे हुए हैं ऐसी स्थिति में वे किसी से मिलना जुलना या किसी के पास आने जाने से भी उन्हें डर लगने लगा है। बच्चे चाहते हैं कि लॉकडाउन जल्दी से खुल जाए ताकि सब कुछ पहले की तरह सामान्य हो जाए!

लॉकडाउन की वजह से प्रभावित सड़क और कामकाजी बच्चे

रिपोर्टर विजय कुमार

इसमें कोई संदेह नहीं कि लॉकडाउन का केहर सब पर पड़ा है. आमिर परिवार के बच्चे तो संभल जाएंगे लेकिन गरीब परिवार के बच्चे जो सिर्फ दो वक्तकी रोटी पर निर्भर हैउनका तो बुरा हाल हैना स्कूलना पढाई न खानाना सुविधाजलवायु टावर कांटेक्ट पॉइंट पर कम से लगभग 130 बच्चों पर काफी प्रभाव पड़ा है. यह संख्या काफी बड़ी हो सकती थी लेकिन लॉकडाउन से पहले बहुत परिवार migrate कर चुके थे. बच्चे काफी परेशान हो चुके हैं कुछ बच्चों को मजबूरी में कुड़ा कबाड़ा का काम करना पड़ा है बच्चों की ये उम्र पढ़ने की है ना कि काम करने की लॉकडाउन ने बच्चों पर नकारात्मक असर भी डाला है बच्चों का कहना था कि स्कूल जाते थे तो बहुत कुछ सीखने को मिलता थानए दोस्त बने थेस्कूल का खुला साफ स्वच्छ वातावरणसुबह सुबह morning assembly लेकिन अब ऐसा कुछ भी नहीं होताघर में कैद हो कर रहना पड़ता है हमारे पास तो स्मार्ट फोन भी नहीं जो ऑनलाइन क्लास ले सके मोबाइल है बी तो उसमे रिचार्जकी समस्या होती है पापा काम करते थे तो रिचार्ज भी करा लेते थे लेकिन अब फोन में रिचार्ज करवाने के लिए भी पैसे नहीं है!

लॉकडाउन में बच्चे के परिवार की स्थिति

रिपोर्टर विजय कुमार बातूनी रिपोर्टर अंकुल

अंकुल 15 साल का है। यहां गुड़गांव में बादशाहपुर के स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ता है। इसके पिता जी का नाम श्री अमरेश और माता जी का नाम श्रीमती सुमन है। यह उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले के रहने वाले हैं। अंकुल के परिवार का कन्नौज में रोजगार ना होने के कारण इनके परिवार का पालन पोषण करने में समस्या आने लगी। जिसकी वजह से इनका परिवार गुड़गांव में आ गया और यही रहने लगा। यहां रहकर अंकुल के पिताजी ने लाल बत्ती के पास छोटी सी एक चाय की दुकान खोली, जिस पर कभी-कभी अंकुल भी वहां काम करता है। उनके परिवार में दो भाई और एक बहन है अंकुल की माताजी की तबीयत काफी दिनों से खराब थी इसलिए इसकी माताजी अब इस दुनिया में नहीं रही। अब घर का काम भी सारा अंकुल को ही करना पड़ता है क्योंकि यह अपने भाई बहनों में सबसे बड़ा है।

अंकुल को पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। गुडगांव में आने के बाद अंकुल को चेतना संस्था से एक भैया मिले और उन्होंने अंकुल का दाखिला पास के सरकारी स्कूल में करा दिया। अंकुल रोज पढ़ने जाता है और अब वह आठवीं कक्षा में पढ़ रहा है। उसके घर की आर्थिक स्थिति सही नहीं होने के कारण अंकुल पढ़ाई के साथ-साथ घर का काम और पिताजी की दुकान के काम में भी हाथ बटाता है। लेकिन अब लॉकडाउन लगने के कारण उसकी दुकान भी नहीं चल पा रही है वह भी बंद है जिसकी वजह से ल्ल'४'और उसके परिवार को घर चलाने में बहुत समस्या आ रही है, उन्होंने जो पैसे बचा कर रखे थे। उसकी माता जी की बीमारी होने पर खर्च हो गए इसलिए अब उन्हें कर्ज लेकर घर का गुजारा करना पड़ रहा है।अंकुल बड़ा होकर एक अच्छा डॉक्टर बनना चाहता है और लोगों का फ्री में इलाज करना चाहता है।

लॉकडाउन का कम्युनिटी पर प्रभाव

रिपोर्टर विजय कुमार

लॉकडाउन का गंभीर प्रभाव कम्यूनिटी पर पड़ रहा है! दैनिक मजदूरी, दिहाड़ी, फेरीवाले, ऑटो वाले, सभी का काम बंद हो गया. आर्थिक रूप से लोग बहुत गरीब हो गए. इनकी स्थिति बिल्कुल बिगड चुकी हैउधार और कर्ज पर पैसे लेकर परिवार को दो वक्त की रोटी खिला रहे हैऔरते जो कोठियों में खाना बनाने का काम करती थी उनका काम बंद हो गया है घर का खर्चाबच्चों का पालन पोषणझुग्गी का किराया लोगों की स्तिथि बहुत दयनीय हो गई है! मजबूरी में लोगों को एक ही समय खाना मिलता है. तो छडउडऊहठ से कम्यूनिटी पर गहरा प्रभाव पड़ा है. उलएळठअ ठ.ऋड की तरफ से जब झुग्गी में जा कर वास्तविक स्थिति का पता लगाया गयाजब बच्चों से बात की गयी तो उन्होंने बताया सारा दिन घर पर रहकर बोरहो जाते हैंस्कूल में दाखिला हुआ था पर अब स्कूल भी बंद है झुग्गी का मालिक हमे बाहर खेलने नहीं देता स्नेहा ने बताया हमारे घर के हालात ऐसे हो चुके हैं कि अब हम24 घंटों में एक बार खाना खाते हैं किसी तरह की कोई सहायता हमे इस समय नही मिल रही है

भिक्षा मांगने वाले बच्चो की कहानी उनकी जुबानी

बातूनी रिपोर्टर विमला पूनम आगरा

यह खबर आगरा शहर में रहने वाले बच्चों की है यह बच्चे अलग अलग चौराहों पर भीख मांगने का कार्य करते हैं जब बालकनामा पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत किया तब 10 वर्षीय विमला ने बताया कि वह अपने पिता और अपने भाई बहनों के साथ नदी पुरा क्षेत्र में रहती है और वह भीख मांगने का कार्य करती है झिलमिलाती धूप में नंगे पैर भीख मांगने निकल जाती है और पूरे दिन में 50 से 100 रूपए तक मिल जाते है उसी से हम अपने घर का खर्चा चला लेते हैं लेकिन कभी-कभी वह पैसा भी नहीं मिलता भीख मांगने पर क्योंकि ज्यादातर लोग हमें खाने पीने की चीजें दे देते हैं हमें खाना होता है हम अपना पेट तो भर लेते हैं लेकिन जो हमारे घर पर छोटे छोटे भाई बहन और बाकी की जरूरत है तो पैसों से सामान लाकर होती हैं लेकिन जब खाने पीने का सामान सिर्फ मुझे ही मिल पाता है और मेरे भाई बहन वहां इंतजार कर रहे होते हैं कि मेरी बहन को कुछ पैसे मिलेंगे तो वह खाने के अलावा हमारी बाकी की जरूरत है अभी पूरा करेगी लेकिन ऐसा नहीं होता है जब बालकनामा पत्रकार ने बालिका से भीख ना मांगने के लिए कहा तब बालिका ने कुछ सवाल किए क्या अगर हम भीख मांगना बंद कर दें तो हमारे मां-बाप को अच्छा काम मिलेगा और हम बच्चे स्कूल जाने लगेंगे क्या सरकार जो हम बच्चो के अधिकार है वह सब अधिकार दिलाएगीहम बच्चे भीख मांगने छोड़ देगें

करोना महामारी से शहर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की स्थिति हुई दयनीय

रिपोर्टर विजय कुमार

करोना महामारी के बीच सड़क एवं कामकाजी बच्चों की वर्तमान स्थिति को जानने के लिए चेतना संस्था के सक्रिय टीम मेंबर ने ग्राउंड पर जाकर कि उनसे मन की बात! चेतना संस्था के सक्रिय कार्यकर्ता ने आज करोना महामारी के बीच सड़क एवं कामकाजी बच्चों के की वर्तमान स्थिति पर की चर्चा! शहर गुरुग्राम के अंतर्गत चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं ने इस सड़क एवं कामकाजी बच्चों की वर्तमान स्थिति पर की चर्चा साथ ही बच्चों ने बताई कई महत्वपूर्ण जानकारी 13 वर्षीय रानी परिवर्तित नाम ने बताया कि जब से लॉकडाउन लगा है हमें खाने को नहीं मिला और दिन-रात हम लोग अपनी छोटी सी झुग्गियों में रहते हैं बढ़ती धूप और गर्मी के कारण नहीं हम सही से सो पा रहे हैं और नहीं हमें समय पर खाना मिल रहा है हमारे माता-पिता के काम छूट जाने के

कारण अब हमारे माता-पिता जो उधार लेकर आए थे वह भी खत्म हो रहा है हमें नहीं समझ पा रहे कि हम क्या करें12 वर्षीय रोहन परिवर्तित नाम ने बताया कि जब से लॉकडाउन लगा है हम बहुत परेशान हैं हमारे माता-पिता बुजुर्ग हैं और वह देहाड़ी मजदूरी कर हमारा जीवनयापन करते थे लेकिन जब से लॉकडाउन लगा है हम लोग बाहर नहीं निकल रहे हैं जो हमारे पास पैसे थे वह सब खत्म हो गया है और इस बार हमें कोई खाने के लिए भी नहीं पूछ रहे 35 वर्षीय मुन्नी देवी परिवर्तित नाम ने बताया हम लोग इस झुग्गी में रहते है और आसपास के कोठियों में वह अपार्टमेंट में झाड़ू पोछा लगाने का काम करते हैं जब से करोना महामारी तेजी से बढ़ा और लॉकडाउन लगा हम सबका काम छूट गया और अब हम मालिक के पास जाते हैं तो वह हमें मना करते हैं कि जब पूरी तरीके से महामारी खत्म हो जाएगा तब हम तुम्हें अपने पास काम पर रखेंगे! गुरुग्राम के झुग्गी बस्ती के एक्टिव स्टेकहोल्डर ने बताया कि इस महावारी में काफी लोग पलायन कर गांव चले गए तो वहीं दूसरी तरफ जो काफी गरीब लोग थे उनका झुग्गी किराया हम नहीं ले रहे हैं लेकिन वह भी खाने के लिए मजबूर है हम लोग कितने दिन तक सपोर्ट करेंगे यहां पर कोई मदद के लिए भी नहीं आ रहा है! वहीं कई बच्चों का कहना था कि हमारे पास यहां पर खेलने के लिए भी मना करते हैं हम लोग घर के अंदर ही रहते नहीं खेल पाते हैं हमारी पढ़ाई भी बंद है हमारा स्कूल भी बंद है स्कूल की तरफ से कईबार बीच-बीच में सर आते हैं और हाल-चाल पूछकर चले जाते हैं हम पूरे दिन अपने झुग्गियो के आस-पास रहते हैं और कवड़ा बिन कर अपना जीवन चलाते हैं!

लॉक डाउन से प्रभावित बच्चो दर्द

रिपोर्टर संजना

जलवायु टावर सौजन्य से जलवायु टावर गुरुग्राम की मालिन बस्तियों में बच्चों से बातचित के दोरान LOCKDOWN मे इन परिवारो पर क्या असर पड़ाएक रिपोर्टराजकिशोर अपने 3 भाई बहन के साथ और माँ बाप के साथ एक छोटी सी झुग्गी में रहता हैराजकिशोर ने बताया पापा साइकिल की दुकान पर काम करते थेलेकिन अब उनका काम बंद हो गया हैघर का राशन उधार लेते हैंअब तो दुकान वाला भी पैसे मांगने लगा है कि घर की स्थिति बहुत खराब हो चुकी हैउर्फ संजू ने बताया कि मेरी मम्मी जहा काम करती थीअब तो उन्होंने ने भी हटा दियापापा कुछ काम करते नहीं है. मम्मी ही मुझे पढ़ाती है लेकिन अब परिवार का पेट भरना बहुत मुस्किल हो गया हैबबलू ने बताया मेरे पापा फेरीवाले का काम करते थेलेकिन उनको भी खासी जुकाम हो गया है हमारा पूरा परिवार डराहुआ है बबलू ने बताया कि हमे डर है कि कहीं पापा को कोरोना न हो जाये! संजना ने बताया कि बिना स्कूल में झुग्गी में परेशान हो जाती हूँ स्कूल में तो हम पढाई कर लेते थे लेकिन घर पर कोई पढ़ाने वाला नहीं है ना ही कोई Online classes होती है यतींद्र ने बताया न्यूज देख कर हमारा परिवार डरा हुआ हैऊपर से झुग्गी के लोग बिना किसी सावधानी के कही आ जाते हैंमेरे पापा बोल रहे थे गांव जाने की लेकिन कोई व्यवस्था नहीं हैस्नेहाने बताया LOCKDOWN से पहले मम्मी पापा मिलकर काम करते थे पर अब दोनों घर बेठे है झुग्गी का किराया,घर का राशन आदि. गुजारा करना बहुत मुस्किल हो रहा है मैं ट्यूशन जाती थी लेकिन पैसा न देने की वजह से मैंने टूशन छोड़ दिया!

कोविड-19 को लेकर स्लम एरिया और सड़क एवं कामकाजी बच्चों की अपेक्षाएं

रिपोर्टर विजय कुमार

गुरुग्राम प्रोजेक्ट के बढ़ते कदम के सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत करने से पता चला कि बच्चे लॉक डाउन की वजह से दुखी हैं क्योंकि उनका कहना है कि उनके माता-पिता हाउसकीपिंग या मजदूरी का काम करते हैं, जो लॉक डाउन की वजह से बंद हो गया है। ऐसी स्थिति में घर में बचा हुआ खाना खाने को मजबूर हैं। हमारे पेरेंट्स लोगों से कर्ज लेकर जा दुकानदार से उधार लेकर हमारा पालन-पोषण कर रहे हैं।

लॉक डाउन की वजह से वह पार्क भी नहीं जा पा रहे हैं और एक साथ खेलकूद भी नहीं पा रहे हैं। वह पढ़ने भी नहीं जा रहे हैं। घर में बैठकर बोर होने लगे हैं। इस साल कुछ बच्चों का सरकारी स्कूल में एडमिशन हुआ था, बच्चे बहुत उत्साहित थे कि इस बार वह स्कूल जा पाएंगे लेकिन लोक डाउन की वजह से उनके स्कूल भी बंद हो गए जिसकी वजह से उन्हें घर

पर रहकर ही ऑनलाइन पढ़ाई करनी पड़ती है। स्कूल में दाखिला होने के बाद कुछ बच्चों को नई किताबें मिली थी उन्होंने स्कूल जाने के लिए अपने ड्रेस सिलवाए थे लेकिन लॉकडाउन की वजह से वह स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। यह उनके लिए बहुत ही दुखद समय का अनुभव है। जिसमें जिन बच्चों के घर में स्मार्टफोन नहीं है वह पढ़ भी नहीं पाते हैं। सभी बच्चे करोना वायरस से बहुत ही सहमे हुए हैं ऐसी स्थिति में वे किसी से मिलना जुलना या किसी के पास आने जाने से भी उन्हें डर लगने लगा है। बच्चे चाहते हैं कि लॉकडाउन जल्दी से खुल जाए ताकि सब कुछ पहले की तरह सामान्य हो जाए।

पिताजी के दारू पीने की लत के कारण काम करने को मजबूर दो लड़कियां

रिपोर्टर फैजान

यह खबर हैं पश्चिमी दिल्ली के शकूरबस्ती की झुग्गियों में रहने वाली दो लड़कियों की । पिंकी और रिंकी(बच्चों का नाम परिवर्तित कर दिया गया हैं।) अपने परिवार में 7 सदस्यों के साथ रहती हैं जिसमें उनके माता पिता, वह दोनों और उनके दो छोटे भाई और 1 छोटी बहन रहती हैं। पिंकी और रिंकी के पिताजी दिन भर घर पर ही दारू पी

कर पड़े रहते हैं और काम पर नही जाते हैं। दोनों बच्चों की माता की कोठी के काम पर जाती हैं। जिसके उनके घर का खर्चा चलाना बहुत ही कठिन हो जाता हैं क्योंकि परिवार में 7 सदस्य हैं। घर की आर्थिक स्तिथि कमजोर होने के कारण दोनों बच्चों को मजबूरी में कोठी के काम पर जाना पड़ता हैं। दोनों बच्चों को पर जाना अच्छा नहीं लगता है लेकिन उनके पिताजी काम नहीं करते हैं जिसकी वजह से दोनों बहनों को कोठी के काम पर जाना पड़ता है। दोनों बच्चे काम करके अपने घर का खर्च चलाते हैं और अपने छोटे भाई बहनों की देखभाल भी करते हैं।

पारिवारिक विवाद के कारण बच्चों ने छोड़ा अपना घर

रिपोर्टर पूनम

यह खबर आगरा शहर में रह रहे बच्चों की है जो कि किसी ना किसी कारण अपने अपने घर से निकलकर आगरा आ गए हैं जब बालकनामा पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत किया तब 12 वर्षीय अंजली ने बताया की मेरे घर बिहार से मुझे मेरा मामा अपने घर आगरा लेकर आए थे और कुछ दिन मामा ने मुझे अच्छे से रखा फिर उसके बाद मामा मामी मुझे अपने साथ बेलदारी के काम पर लेकर जाते थे और लॉकडाउन के कारण जब काम धंधा बंद हो गया और घर में रोज के आपसी विवाद होने लगे तभी मामा सभी बच्चों और मुझे भी साथ में लेकर कहीं जा रहे थे और मामा ने मुझे बीच रास्ते में बस से उतार दिया!

मामी मामा मुझे छोड़कर अपने बच्चों को लेकर पता नहीं कहां चले गए तभी वहां पर एक पुलिस वाले अंकल मिले मैंने उनसे पुछा कि यह कौन सी जगह है तब पुलिस वाले अंकल ने बताया कि यह जैतपुर है और तब उन्होंने मुझसे पूछा आप यहां कैसे आए और कौन लेकर आया फिर मुझे थाने में लेकर गये उसके बाद वहां से मुझे चाइल्ड लाइन कार्यालय में लेकर गए उनके सहयोग से मुझे रामलाल वृद्धा आश्रम रखवाया गया वहां पर मैं अच्छे से रह रही हूं पर मुझे अपने मम्मी पापा की बहुत याद आती है!

बालकनामा पत्रकार दूसरी 15 वर्षीय बालिका खुशी उर्फ साहिबा से बातचीत किया तब बालिका खुशी और साहिबा ने बताया कि वह अपने परिवार में हो रहे आपसी विवाद के कारण घर

से निकल आई थी साथ ही बालिका ने बताया कि मेरी मां मुझ से घर का सारा काम करवाती थी और वह छोटी-छोटी बातों पर मुझ पर चिल्लाती और मेरी पिटाई लगा देती थी इस कारण मैं घर से निकल कर आ गई और मुझे रास्ते में एक महिला मिली और वह महिला उसे काम का लालच देकर आगरा लेकर आई थी और फिर आगरा के चौराहा रामबाग पर बस रुकी और वह महिला वहां से निकल गई फिर मैंने एक पुलिस वाले अंकल से पूछा कि यह कौन सी जगह है

तब उन्होंने बताया कि यह आगरा खंदौली है तब पुलिस वाले अंकल को मैंने सारी बात बताई और मैं बुलंदशहर गांव खुर्जा की रहने वाली हूं फिर उसके बाद पुलिस वाले अंकल मुझे चाइल्ड लाइन के भैया दीदी के पास लेकर गये उसके बाद मुझे आशा ज्योति केंद्र में रखवाया गया और फिर मेरे माता-पिता का पता लगाकर मुझे बाल कल्याण समिति में प्रस्तुत करके मुझे मेरे माता पिता को सोंपा गया और मेरे माता पिता मेरे माता-पिता को समझाया कि वह मेरी पढ़ाई और मेरा ध्यान रखें और मेरे साथ बुरा बर्ताव न करें

पत्रकार की मदद से चाइल्ड लाइन द्वारा बच्चो को मिला राशन सहयोग

बातूनी रिपोर्टर सोनू ,रिपोर्टर पूनम

यह खबर आगरा शहर में रहने वाले बच्चों की है बालकनामा पत्रकार ने नगला मोहन के बच्चों से बातचीत करी तो बच्चों ने बताया कि लॉकडाउन के कारण काफी अलग-अलग प्रकार के कार्य करने जाते हैं जैसे कि कोठियों पर काम करना कारखानों में कार्य करना सब्जी का ठेला लगाना भेलपुरी,चाट बेचना या फिर किसी ढाबे या चाय वाले की दुकान पर कार्य करना लॉकडाउन के कारण घर की स्थिति बिगड़ती जा रही है और इस कारण बच्चों ने घर की स्थिति को देखते हुए परिवार की जिम्मेदारी में हाथ बटाना शुरू कर दिया 14वर्षीय सोनू ने बताया कि मेरे माता पिता बचपन में ही गुजर गए थे और मेरी तीन बहनें हैं जो कि जिस दिन की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है मैं अपनी बहनों के साथ झुग्गी झोपड़ी में रहता हूं अपनी बहनों का पालन पोषण करने के लिए मुझे जूते की फैक्ट्री में काम करने जाना पड़ता है और उन बहनों की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है और मैं उन जिम्मेदारियों से बंधा हुआ हूँ यदि मैं जूते का कार्य नहीं करूंगा तू मैं अपनी बहनों का पालन पोषण नहीं कर पाऊंगा जब बालकनामा के पत्रकार सोनू की बात सुनी तो उन्हें काफी दुख हुआ तब पत्रकार ने चाइल्ड लाइन के सहयोग से उन बच्चों के लिए खाद्य सामग्री की व्यवस्था करवाई और अब उन बच्चों को मुख्यमंत्री बाल योजना से जोड़ा जा रहा है ताकि इन बच्चों का उज्जवल भविष्य बन सके!

माता पिता से दूर गुम हुए बच्चो की दास्तां

पूनम आगरा

पत्रकार ने 16 वर्षीय करुणा छत्तीसगढ़ की रहने वाली है ने बताया कि बालिका को उसकी मां के घर से चाची अपने मायके में लेकर गई थी और चाची की मम्मी और चाची ने उस पर कोठी पर काम करवाने के लिए भेजा और वह काम करवाती थी लेकिन जब लॉकडाउन के कारण सारे काम धंधे बंद हो गए और चाची की मां मुझे रोज ताने मारती और खाना नहीं देती थी इस कारण अपनी दीदी के घर दिल्ली आ गई और दीदी ने भी मुझे अपने घर से आकर दिल्ली के रेलवे स्टेशन से एक गाड़ी में बैठा दिया

वहां से मैं अकेली बैठकर चली आई तभी काफी समय होने के बाद वहां मेरे पास बैठी एक महिला और एक भैया से मैंने पूछा यह कौन सी जगह है तब उस महिला और भैया ने मुझे थाना लोहामंडी लेकर आए और वहां से मुझे चाइल्ड लाइन के दीदी भैया के सुपुर्द कर दिया और चाइल्डलाइन के दीदी भैया ने मुझे रामलाल वृद्धा आश्रम मैं रखवाया और वहां पर मैं अच्छे से रह रही हूं मुझे अपने मम्मी पापा और घर की बहुत याद आती है जब इन बालिकाओं के संबंध में चाइल्डलाइन कोऑर्डिनेटर रितु मैम से बात किया तब उन्होंने बताया कि बालिकाओं के परिवार का पता लगाया जा रहा है और जैसे ही पता चलता है इन बालिकाओं को हम उनके माता-पिता को सुपुर्द कर देंगे

स्कूल बंद होने से बच्चो पर हुआ इस तरह बुरा प्रभाव

बातूनी रिपोर्टर मुकुल ,रिपोर्टर पूनम

यह खबर आगरा शहर में क्षेत्र सदर भट्टी रहने वाले बच्चों की है बालकनामा पत्रकार ने जब उस क्षेत्र में जाकर विजिट के दौरान कुछ बच्चों से बातचीत किया और वहां का माहौल देखा तब बच्चे अपनी पढ़ाई छोड़ कर कुछ बिगड़े हुए लोगों के साथ रहकर गलत संगत में पडते जा रहे हैं

जैसे कि जुआ खेलना,शराब पीना,गुटके खाना और परिजन की बातों को इग्नोर करना क्षेत्र सदर भट्टी बस्ती में रहने वाले 12 वर्षीय मुकुल ने बताया कि पहले हम सब बच्चे स्कूल जाते थे लेकिन जब से हम बच्चों के स्कूल बंद हुए तब से ना तो हमारा मन पढ़ाई में लगता है दिन भर बड़े बच्चों व लोगों के साथ तरह तरह के खेल खेलने में मजे आते हैं और उस खेल को हम जुए की तरह खेलते हैं जैसे जुआ पैसों से खेलना लूडो जमीन में गड्ढा बनाकर दूर से पैसे पैक फेंकना यदि गड्ढे के अंदर जितने पैसे आ गए वह खेलने वाले के हो जाएंगे और चित पट खेलते हैं और घरवालों की बिल्कुल भी नहीं सुनते

हैं सब घर वाले पढ़ाई करने के लिए कहते हैं तो बच्चे सिर्फ अपनी मनमानी करते हैं

स्कूल बंद होने के कारण बच्चे गलत संगत में व्यस्त होते जा रहे हैं यदि बच्चों के स्कूल खुले होते तो आज यह बच्चे गलत संगत में नहीं होते क्योंकि स्कूल खुलने से सिर्फ स्कूल की पढ़ाई होमवर्क खेलना कूदना यह सब होता है लेकिन जब से स्कूल बंद हुए तो बच्चों का मन पढ़ने लिखने में नहीं लगता इस तरह बच्चे बुरी आदतों में फंसते जा रहे है ओर अपनी शिक्षा से दूर हो रहे है!

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471